Himachal Pradesh
Forest Department

आय सृजन गतिविधि
व्यवसाय योजना
"बकरी पालन"

स्वयं सहायता समूह का नाम	:	"जय महा देव"
ग्रामीण वन विकास समिति का नाम	:	सिहडा
फील्ड टेक्निकल यूनिट का नाम	:	सदर
डीएमयू/वन मंडल का नाम	:	बिलासपुर
एफसीसीयू / सर्कल	:	बिलासपुर
हि. प्र. व .पा .त . प्र. और आ. सु. प. जाईका के द्वारा प्रायोजित		द्वारा तैयार:- डीएमयू बिलासपुर, एफटीयू सदर और जय महा देव स्वयं सहायता समूह

विषयसूची

विवरण	पृष्ठ
परिचय	3-4
कार्यकारी सारांश	4
स्वयं सहायता समुह का विवरण	4-7
गांव का भौगोलिक विवरण	7
आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण।	8
उत्पादन प्रक्रियाएं।	8
उत्पादन योजना का विवरण	9
विपणन / बिक्री का विवरण	9-10
सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण	10
स्वोट अनालिसिस	10
संभावित जोखिमों का विवरण और उन्हें कम करने के उपाय।	10-11
परियोजना के अर्थशास्त्र का विवरण	11
अर्थशास्त्र का सारांश	12
लाभ लागत विश्लेषण	13
ब्रेक-ईवन पॉइंट की गणना	13
टिपणी	13
परियोजना की कुल लागत	14
अनुलग्नक	15-16

परिचय:-

हिमाचल प्रदेश राजसी, पौराणिकभूभाग है और अपनी सुंदरता और शांति, समृद्ध संस्कृति और धार्मिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। राज्य में विविध पारिस्थितिकी तंत्र, नदियाँ और घाटियाँ हैं, और इसकी आबादी 7.5 मिलियन है और यह 55,673 वर्ग किमी में शिवालिक की तलहटी से लेकर मध्य पहाड़ियों (MSL से 300 - 6816 मीटर ऊपर), ऊँची पहाड़ियों और ऊपरी हिमालयके ठंडे शुष्क क्षेत्रों को शामिल करता है। यह घाटियों में फैला हुआ है जिसमें कई बारहमासी नदियाँ बहती हैं। राज्य की लगभग 90% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। कृषि, बागवानी, जल विद्युत और पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक हैं। राज्य में 12 जिले हैं और इसकाआबादी घनत्व काफी है ।

वी.एफ.डी.एससिहडा क्षेत्र बिलासपुर सदर रेंज के बागी बिनोला बीट के अंतर्गत आता है जनसखिकी विशेषताओं और वन क्षेत्रो का उपयोग करने वाले ग्रामीणों को ध्यान मे रखते हुए सिहडा के लिए अपने पर्यटन स्थलों औरहिमालयी यात्राओं के लिए प्रवेश द्वार है, बिलासपुर जिला से हिमालयी यात्राओं के लिए रास्ते मेंमंडी कुल्लू, शिमला, सोलन, हमीरपुर और कांगड़ा जिलों को जोड़ता है ।सिह्डा पंचायत बिलासपुर जिला से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और राज्य की राजधानी शिमला से 125 किलोमीटर दूर है

यह जिला प्राचीन बस्तियों और पारंपरिक खेती के किये प्रसिद्ध है जिसकी सतलुज नदी मुख्य जीवन रेखा हैं । तथा भाखड़ा बाँध के निर्माण के पश्चात् इस जिले का अधिकतर उपजाऊ भू क्षेत्र जलमग्न हो गया है ।

वन और वन पारिस्थितिकी तंत्र समृद्ध जैव विविधता के भंडार हैं, और नाजुक ढलान वाली भूमि को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका के प्राथमिक स्रोत थे। ग्रामीण लोग अपनी आजीविका और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए वन संसाधनों पर सीधे निर्भर हैं। कठोर वास्तविकता यह है कि चारा, ईंधन, एनटीएफपी निकासी, चराई, आग और सूखा आदि जैसे अत्यधिक दोहन के कारण ये संसाधन लगातार कम हो रहे हैं।

मलांगनवन ग्रामीण विकास समिति के तहत आजीविका सुधार गतिविधियों को लागू करने के लिए एक स्वयं सहायता समुहों का गठन किया गया है। इनमें से एक है, "जय माँ सरस्वती" स्वयं सहायता समुह, कटाई, सिलाई और बैग निर्माण से संबंधित है । समूह के सदस्य समाज के कमजोर वर्ग से संबंधित हैं और उनके पास कम भूमि जोत है। अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाने के लिए, उन्होंने कटाई, सिलाई और बैग निर्माण करने का फैसला किया। व्यवसाय योजना तैयार करने के लिए तकनीकी सहयोग डॉ पंकज सूद, प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ कविता शर्मा और डीएस यादव, कृषि विज्ञानं केन्द्र मंडी स्थित सुंदर नगर द्वारा प्रदान किए गए थे। दलजिसमें विजय कुमार,विषय विशेषज्ञकार्यालय वनमंडल सुकेत, डॉ उल्शीदा,विषय विशेषज्ञकार्यालय वनमंडल बिलासपुर, अनु ठाकुर वन रक्षक,सिहडा बीट और समीर मोहम्मद, वनखंड अधिकारी, फील्ड तकनीकी यूनिट मधु पंडीर वन खंड सदर शामिल रहे जिसमे वेद प्रकाश पठानियासेवानिवृत्त हि० प्र० व० से ० के निरंतर पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में व्यवसाय योजना तैयार करने में योगदान रहा ।

अनुलग्नक

हम सब समूह के सदस्य ने आई जी गतिविधि मे सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सहमति दी है एचपी पारिस्थितिक तंत्र प्रबंधन और आजीविका मे सुधर और वी एफ डी एस के साथ समन्वय के लिए जे आई सी ए परियोजना के दिशा निर्देश के अनुसार समूह (जय महादेव)द्वारा चुना गया।

सदस्यो का विवरण इस प्रकार है

क्रम संख्या	नाम	पद	वर्ग	उम्र	हस्ताक्षर
1	सुमन कुमारी	प्रधान	राजपूत	39	Suman Kumari
2	रीना देवी	सचिव	राजपूत	99	
3	सुमा देवी	कोषाध्यक्ष	राजपूत	33	रीना देवी
4	लीला देवी	सदस्य	राजपूत	36	लीला देवी
5	सुमा देवी	सदस्य	राजपूत	33	सुमा देवी
6	मीरा देवी	सदस्य	राजपूत	56	मीरा
7	नीलम देवी	सदस्य	राजपूत	31	नीलम देवी
8	अंजु देवी	सदस्य	राजपूत	33	Anju Devi
9	रचना देवी	सदस्य	राजपूत	47	रचना देवी
10	शकुंतला देवी	सदस्य	राजपूत	40	शकुन्तला देवी
11	सन्तोष कुमारी	सदस्य	राजपूत	43	सन्तोष कुमारी
12	कौशल्या देवी	सदस्य	राजपूत	60	कौशल्या देवी
13	निर्मला देवी	सदस्य	राजपूत	45	निर्मला देवी
14	आशा देवी	सदस्य	राजपूत	33	आशा देवी
15	रामप्यारी देवी	सदस्य	राजपूत	50	प्यारी देवी
16	पुष्पा देवी	सदस्य	राजपूत	30	Pushpa Devi
17	राधा देवी	सदस्य	राजपूत	40	राधा देवी

सुमन कुमारी (प्रधान)
नीशा देवी (सचिव)
रीता देवी (कोषाध्यक्ष)
सुमा देवी
लीला देवी
रचना देवी
भीरा देवी
नीलम देवी
अंजु देवी
पुष्पा देवी
शकुन्तला देवी
संतोष कुमारी
कौशल्या देवी
निर्मला देवी
आशा देवी
राम प्यारी देवी
राधा देवी

कार्यकारी सारांश

सिह्डा वन ग्रामीण विकास समिति:-

सिह्डा ग्रामीण विकास समितिखंगड़राजस्व मुहाल में व्यवस्थित है। इस वन ग्रामीण विकास समिति का गठन ग्राम पंचायत सिहडामें किया गया है। यह हिमाचल प्रदेश में बिलासपुर जिले के सदर ब्लॉक में स्थित है सिहडा वन ग्रामीण विकास समिति बिलासपुर वन मंडल प्रबंधन इकाई (डीएमयू) के सदर वन परिक्षेत्र के तहत सदर वन खण्ड के बिनौला बीट के अंतर्गत आता है ।

परिवारों की संख्या	170
बीपीएल परिवार	63 =20.93%
कुल जनसंख्या	1330

स्वयं सहायता समुहका विवरण

अनौपचारिक सिह्डा स्वयं सहायता समुह का गठन फरवरी2021में सिहडा वन ग्रामीण विकास समिति के तहत कौशल और क्षमताओं को उन्नत करके आजीविका सुधार सहायता प्रदान करने के लिए किया गया था। समूह में गरीब और सीमांत किसान शामिल हैं। “जय महादेव स्वयं सहायता समुह महिला समूह (17 महिलाएं) है जिसमें कम भूमि संसाधन वाले समाज के सीमांत और वित्तीय कमजोर वर्ग शामिल हैं। हालांकि समूह के सभी सदस्य मौसमी सब्जियां आदि उगाते हैं, लेकिन चूंकि इन सदस्यों की भूमि बहुत छोटी है और सिंचाई की सुविधा कम है और उत्पादन का स्तर संतृप्ति के करीब पहुंच गया है, इसलिए अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्होंने आगे बढ़ने का फैसला किया। कटाई, सिलाई और बैग निर्माण जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है। इस समूह में 17सदस्य हैं और उनका मासिक योगदान 100/- रुपये प्रति माह है। समूह के सदस्यों का विवरण इस प्रकार है:-

जय महा देव :-

स्वयं सहायता समूह का नाम	::	**जय महादेव**
एसएचजी/सीआईजी एमआईएस कोड संख्या	::	-
ग्रामीण वन विकास समिति का नाम	::	**ग्रामीण वन विकास समिति सिहरा**

फील्ड टेक्निकल यूनिट का नाम	:	सदर
डीएमयू/वन मंडल का नाम	::	बिलासपुर
गांव	::	सिहरा
विकास खंड	::	सिहरा
ज़िला	::	बिलासपुर
स्वयं सहायता समूह में सदस्यों की कुल संख्या	::	17
गठन की तिथि	::	09/05/2019
बैंक का नाम और विवरण	::	HP Co-Operative Bank Bilaspur
बैंक खाता संख्या	::	10610120845
एसएचजी/मासिक बचत	::	रु.100/- प्रति महिला
कुल बचत	::	15,300/-
कुल अंतर-ऋण	::	0
नकद ऋण सीमा	::	0
चुकौती स्थिति		0

गांव का भौगोलिक विवरण

जिला मुख्यालय से दूरी	:	12 किमी	
मुख्य मार्ग से दूरी	: :	3 km (लेकिन मुख्य सड़क से) लगभग3 किलोमीटर की दूरी पर है I	
स्थानीय बाजार का नाम एवं दूरी	:	बिलासपुर 12 किमीलगभग ।	
प्रमुख शहरों के नाम और दूरी	: :	घाघस से 42 किलोमीटर की दूरी और ब्रहाम्पुखर 14 किलोमीटर की दूरी और बिलासपुर से 12 किलोमीटर की दूरी मे स्थित है	
प्रमुख शहरों के नाम जहां उत्पादों को बेचा/विपणित किया जाएगा	: :	बिलासपुर, सदर,घुमारवीं	
पिछली और अग्रिम कड़ियों की स्थिति	: :	पिछलीकड़ी प्रशिक्षण, (कृषि विज्ञान केन्द्र) और अग्रिमकड़ी बाजार आपूर्तिकर्ताओं में निहित है आदि।	

आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण

उत्पाद का नाम	::	बकरी पालन
उत्पाद पहचान की विधि	::	यद्यपि पूरे समूह के सदस्य मौसमी सब्जियों की फसल उगाते हैं। क्यूंकि उनकी भूमि जोत बहुत छोटी है, उत्पादन संतृप्ति बिंदु पर पहुंच गई है, इसलिए वे अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं, इसलिए समूह के सदस्य द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने तथा कृषि से अपनी कृषि उत्पादकता में वृद्धि के लिए बकरी पालन का व्यवसाय चुना जिससे समूह की आय के साथ साथ दूध की आवश्यकता भी पूरी होगी बाजार कड़ियाँ पहले से ही मौजूद हैं। बकरी खरीदने के लिए व्यापारी गाँव में ही उपलब्ध है अतः इसके लिए अतिरिक्त समय और पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा ।
एसएचजी/सीआईजी/ की सहमति समूह	::	सहमति अनुलग्नक के रूप में संलग्न है।

उत्पादन प्रक्रियाएं

स्थानीय पशु पालन विभाग तथा स्थानीय लोगों की बकरी पालन के बारे में "जाईका परियोजना" द्वारा जानकारी साँझा की जाएगी जिससे लोगों में सिरोही नस्ल को पालने के बारे में जागरूकता होगी। जो स्पॉट प्रदर्शन के साथ प्रशिक्षण की पूरी लागत JICA परियोजना द्वारा वहन की जाएगी है।

समूह को शुरू में कुल 26 बकरियां और एक वक बकरा दिया जाएगा I बकरियों की आयु 6-8 माह, जिनका वजन लगभग 10-12 किलोग्राम तथा बकरा 9-12 महीने आयुवर्ग में जिसका वजन 17-20 किलोग्राम हो । यह बकरा इस समूह की बकरियों की नस्ल सुधार के लिए दिया गया है जो समूह में प्रत्येक सदस्य के पास एक एक महिना बारी बारी रहेगा। पूरे समूह का पशुधन समूह की सम्पत्ति होगी तथा बिक्री के पश्चात् धन समूह के सदस्यों द्वारा बिक्री के लिए प्रस्तुत किये गये पशुधन के अनुसार वितरित होगा । पशुधन की अकस्मात् या दुर्घटना की स्थिति में मृत पशु का समूह के निर्णय द्वारा निपटान किया जायेगा । समय समय पर समूह द्वारा बेचने योग्य पशुधन सम्बंधित सदस्य की सहमती से समान रूचि समूह द्वारा एकल एवं संयुक्त रूप में बेचा जायेगा ।इसी तरह समूह में बकरी दूध का निपटान भी समूह द्वारा मूल्यवर्धन करके (जैसे कि पैकेजिंग इत्यादि) किया जायेगा ।

उत्पादन योजना का विवरण:

उत्पादन चक्र (6 मास)	::	बिलासपुर जिले में बकरी पालन पुरे वर्ष की जाती है। समूह को शुरू में कुल 26 बकरियां दी जाएंगी, जिनमे एक बकरा होगा, बकरियों की आयु 6-8 माह, जिनका वजन लगभग 10-12 किलोग्राम तथा बकरा 9-12 महीने आयुवर्ग में जिसका वजन 17-20 किलोग्राम हो। यह बकरा इस समूह की बकरियों की नस्ल सुधार के लिए दिया गया है जो समूह में प्रत्येक सदस्य के पास एक एक महिना बारी बारी रहेगा। अगले 6 मास के बाद पशुधन में वृद्धि प्रजनन द्वारा होगी जिसमे की सुरोही नस्ल की बकरियां आमतोर पर एक से दो बच्चे देती है। जिससे उस समूह में बकरियों की संख्या दो से अढ़ाई गुना बढ़ेगी। जिन्हें अगले तीन महीने में समूह द्वारा निपटान किया जाएगा ताकि अगली बकरियों की पैदावार सुनिश्चित की जाए।
जनशक्ति की आवश्यकता (संख्या)	::	प्रारंभ में पूरा समूह रैक लगाने/निर्माण करने, कमरे को साफ करने और पशुधन लाने एवं उनका रखरखाव आदि के लिए काम करेंगे। अगले 180-365 दिनों के लिए सभी व्यक्ति 1-2 घंटे घास कटाई, चराई एवं सफाई के लिए काम करेंगे। विपणन के घंटे शामिल नहीं हैं क्योंकि बाजार कड़ियाँ पहले से ही मौजूद हैं। बकरी खरीदने के लिए व्यापारी गाँव में ही उपलब्ध है अतः इसके लिए अतिरिक्त समय और पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा।
कच्चे माल का स्रोत	::	स्थानीय पशु पालन विभाग एवं अन्य बाह्य संस्थान
अन्य का स्रोत साधन।	::	-उपरोक्त-

विपणन / बिक्री का विवरण

संभावित बाजार स्थान	::	स्थानीय पशु व्यापारी एवं बिलासपुर, भगेर, घुमारवीं ,झंडूत्ता ,समोह ,बरठीं क्न्दरौर
इकाई से दूरी	::	12 कि.मी. बिलासपुर ब्रहाम्पुखर 20,कि.मी., घागस 45 कि.मी.
बाजार में उत्पाद की मांग		बकरी मास की मांग साल भर रहती है।
बाजार की पहचान की प्रक्रिया	::	उपरोक्त सभी कस्बे में मांस बेचने का बाजार सुस्थापित है।
बाजार पर मौसम का प्रभाव।	::	माँस पूरे वर्ष उच्च मांग में रहता हैं। हालांकि, सर्दियों के दौरान इसकी मांग अधिक बढ़ जाती है।
उत्पाद के संभावित खरीदार।	::	संभावित बाजार, बकरी खरीदने के लिए व्यापारी गाँव में ही उपलब्ध है।
क्षेत्र में संभावित उपभोक्ता।	::	सभी नागरिक / परिवार।

उत्पाद का विपणन तंत्र।	::	बाजार कड़ियाँ पहले से ही मौजूद हैं। बकरी खरीदने के लिए व्यापारी गाँव में ही उपलब्ध है अतः इसके लिए अतिरिक्त समय और पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा ।
उत्पाद की मार्केटिंग रणनीति।	::	
उत्पाद नारा	::	सिरोही बकरी

सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण

सभी सदस्य प्रशिक्षण लेने के बाद स्वयम को दैनिक काम के संचालन, विपणन और विभाग तथा ग्रामीण वन विकास समिति के साथ जुड़ाव रखते हुए आपस मे श्रम विभाजन करेंगे।

SWOT विश्लेषण

विवरण / आइटम	**:**	**विवरण**
ताकत	::	समूह के सभी सदस्य समान विचारधारा वाले, और पहले से ही बकरी पालन करते है एसएचजी वित्तीय सहायता के लिए जाईका वानिकी परियोजना द्वारा प्रशिक्षण और एक्सपोजर का आयोजन किया जाएगा।
दुर्बलता	::	नया स्वयं सहायता समूह/समान रूचि समूह
मौका	::	डिमांड ज्यादा है और रिटर्न ज्यादा।
खतरा	::	समूह में आंतरिक झगड़े, पारदर्शिता की कमी और बड़े खतरे वहन क्षमता की कमी

संभावित खतरों का विवरण और उन्हें कम करने के उपाय

संभावित जोखिम	**:**	**उपाय करने के लिए कम करने के लिए उन्हें।**
1. एक ही समय मे हानिकारक संक्रमण पुरे बकरी समूह को नस्ट कर सकता है 2. बकरी शालिका में बैठने के स्थान का निर्माण एवं रखरखाव	: :	सबसे पहले बकरी शालिका में बैठने के स्थान का निर्माण और उसकी साफ़ सफाई का ध्यान रखें । पशु रखने से पहले फॉर्मेलिन/फिनायल के घोल से कमरे में स्प्रे करें कमरे में प्रवेश कर रहा है। फिनायल का नियमित स्प्रे करें। पेट के कीड़ों की दवाई नियमित पिलायें
समूह में आंतरिक संघर्ष, पारदर्शिता	: :	कलह को मिटाने के लिए कारण को प्रारंभिक चरण में निपटाया जायेगा। समूह के सभी सदस्यों के लिए समान अनावरण, समान लाभ का बंटवारा, हर सदस्य को आदर और सम्मान देने की आवश्यकता।
बाज़ार		बाजार हमेशा उपलब्ध है
उत्पादन	:	बाजार के हिसाब से धीरे-धीरे उत्पादन को बढ़ाया जाएगा

परियोजना के अर्थशास्त्र का विवरण ।

परियोजना की लागत	**संख्या**	**मूल्य**	**राशि रु में**
(अ)पूंजी लागत			
6-8 माह आयुवर्ग, वजन लगभग 10-12 किलोग्राम की बकरा और बकरियां	34	9000	3,06,000
ए कुल पूंजी लागत			3,06,000
(ब)आवर्ती लागत			
संतुलित राशन, गेहूं का भूसा, हरा चारा एवं अन्य व्यय 22.5 क्विंटल x34 = 765 qtl.	765 qtl.	550/-प्रति qtl	4,20,750/-
कुल आवर्ती लागत			4,20,750/-
कुल लागत (अ +ब)= 306000+420750			726750
कुल परियोजना लागत (अ +ब)=			229500

आय और व्यय का विश्लेषण (वार्षिक):

विवरण	मात्रा	**राशि (रु.)**
कुल आवर्ती लागत		4,20,750
पशु वृद्धि	34	-------
पशु वृद्धि का विक्रय मूल्य	1	7000/-
आय सृजन (34x12000)	--	408000-/-
खाद की बिक्री	1020 क्विंटल	102000 /-

शुद्धलाभ(408000+3,06,000+102000)-4,20,750/=303450/-		303450+मूल बकरियों के वजन एवं मूल्य में वृद्धि (3,06,000)= 609450/-
शुद्ध लाभ का वितरण		• लाभ मासिक/वार्षिक आधार पर सदस्यों के बीच समान रूप से वितरित किया जाएगा। • IGA में आगे निवेश के लिए लाभ का उपयोग किया जाएगा

वित् आवश्यकता:

विवरण	**कुल राशि (रु.)**	**परियोजना योगदान 75%**	**एसएचजी योगदान**
कुल पूंजी लागत	3,06,000	229500/-	76500/-
कुल आवर्ती लागत	4,20,750/-	0	420750/-
प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन			0
कुल	**726075**	**229500/-**	**497250/-**

ध्यान दें-

- **पूंजीगत लागत -** पूंजीगत लागत का 75% परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा शेष 25% स्वयं सहायता समुह /सीआईजी द्वारा वहन किया जायेगा
- **आवर्ती लागत -** स्वयं सहायता समुह /सीआईजी द्वारा वहन किया जायेगा
- **प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन -** परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा

वित् के स्रोत:

परियोजना का समर्थन	• पूंजीगत लागत का 75% जो परियोजना द्वारा दिया जायेगा तथा 25% जो SHG/CIG द्वारा जमा करवाया जायेगा उसे बकरियों की खरीद व बकरियों के ऊँचे बैठने की जगह बनाने के लिए उपयोग किया जाएगा • SHG/CIG के बैंक खाते में 1 लाख रुपये परिक्रमी निधि के रूप में । जमा करवाया जाएगा जो परियोजना द्वारा पहले VFDS के	• संबंधित डीएमयू/एफसीसीयू द्वारा सभी कोडल औपचारिकताओं का पालन करते हुए बकरियों की खरीद की जायेगी । • परिक्रमी निधि पहले

	खाते में डाला जायेगा। • प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन लागत।	DMU द्वारा VFDS के खाते में डाली जायेगी ।तदोपरान्त SHG की मांग पर VFDS इस रकम को उसे हस्तान्त्रित करेगी प्रशिक्षण/क्षमतानिर्माण/ कौशल उन्नयन लागत परियोजना द्वारा वहन की जायेगी

लागत लाभ विश्लेषण:

= आय+वर्तमान मूल्य/ आवर्ती लागत+ पूंजी लागत

=510000+612000/4,20,750+3,06,000

1122000/726750

= 1.54 जो काफी टिकाऊ है।

ब्रेक-ईवन पॉइंट की गणना

= पूंजीगत व्यय/विक्रय मूल्य -उत्पादन की लागत
= 3,06,000/ 510000 -210375)

=3,06,000/299625

= 1.02

इस प्रक्रिया में पहली बार नए पैदा हुए बच्चे बेचने के बाद ब्रेक ईवन प्राप्त किया जाएगा ।

निगरानी विधि -

- वीएफडीएस की सामाजिक लेखा परीक्षा समिति आईजीए की प्रगति और प्रदर्शन की निगरानी करेगी और प्रक्षेपण के अनुसार इकाई के संचालन को सुनिश्चित करने के लिए यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देगी।
- एसएचजी को प्रत्येक सदस्य के आईजीए की प्रगति और प्रदर्शन की समीक्षा करनी चाहिए और प्रक्षेपण के अनुसार इकाई के संचालन को सुनिश्चित करने के लिए यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देना चाहिए।

निगरानी के लिए कुछ प्रमुख संकेतक इस प्रकार हैं:

- समूह का आकार
- निधि प्रबंधन
- निवेश
- आय उपार्जन
- उत्पाद की गुणवत्ता

परियोजना की कुल लागत है

पूंजीगत लागत = 3,06,000/-

आवर्ती लागत = 4,20,750/-

बकरी पालन के लिए कुल =726750/-/-

क्रम संख्या	व्यवसाय योजना	पूंजीगत लागत	आवर्ती लागत	परियोजना का हिस्सा	लाभार्थी अंशदान	कुल लागत
1.	**बकरी पालन**	3,06,000	4,20,750	229500	76500	726750
2.	**प्रशीक्षण खर्च**	0	0	50000	0	50000
	कुल	**3,06,000**	**4,20,750**	**279500**	**76500**	**726750**